Std. VI. Hindi Lang. लोकोक्तियाँ

इन लोकोक्तियों के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग करें ।

1.मुँह में राम बगल में छुरी --- ऊपर से मीठी बातें पर मन में शत्रुता --- पाकिस्तान भारत के सामने मित्रता का भाव रखता है पर अंदर ही अंदर शत्रुता , इसे कहते हैं मुँह में राम बगल में छुरी ।

2. सावन हरे न बाद सूखे --- सदा एक स्थिति में रहना --- मीना कितना ही क्यों न खा ले , हमेशा दुबली -पतली ही रहती है। जैसे -- सावन हरे न भादो सूखे ।

3. एक ही थाली के चट्टे - बट्टे --- एक ही प्रकार के --- आजकल किस नेता पर विश्वास करें , सब एक ही थाली के चट्टे - बट्टे हैं ।

4. हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के कुछ और --- बाहर से कुछ , भीतर से कुछ --- वह बहुत मीठी-मीठी बातें करता है पर है एकदम धूर्त । इसे कहते हैं हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के कुछ और ।

5.आम के आम गुठलियों के दाम --- दोहरा लाभ --- सुबह सैर करने से शरीर तो ठीक हुआ ही मन भी प्रसन्न हो गया । इसे कहते हैं आम के आम गुठलियों के दाम ।

6.हाथ कंगन को आरसी क्या , पढ़े लिखे को फारसी क्या --- जो सामने है उसके लिए सबूत की ज़रूरत नहीं है -- मेरी बातों पर यकीन न हो तो खुद ही देख लो । इसे कहते हैं हाथ कंगन को आरसी क्या , पढ़े लिखे को फारसी क्या ।

7.अपनी ढपली , अपना राग --- अलग - अलग होना --- अब परिवार के लोग मिलकर कहाँ रह पाते हैं ।आजकल अपनी ढपली , अपना राग है ।

8.आगे कुआँ पीछे खाई--- दोनों ओर मुसीबत ---अब कुछ नहीं हो सकता ,अब तुम फँस गए ।अब तो आगे कुआँ पीछे खाई वाली बात हो गई ।

9. खोदा पहाड़ , निकली चुहिया --- अधिक काम का थोड़ा फल --- पूरे साल परिश्रम करने के बाद भी जब मोहन को व्यापार में कम लाभ हुआ , तो उसके मुँह से यही निकला -- खोदा पहाड़ निकली चुहिया ।

10.ऊँट के मुँह में जीरा --- आवश्यकता अधिक , प्राप्ति कम -- उस पहलवान के लिए दो कचौरियाँ ऊँट के मुँह में जीरे के समान है ।